समास

समास

परिभाषा- दो या दो से अधिक शब्दो के मेल से जो नया शब्द बनता है उसे समस्त पद कहते है! इस मेल की प्रक्रिया को समास कहते है! समास होने पर बीच की विभक्तियो शब्दो तथा 'और' आदि अव्ययो का लोप हो जाता है!

जैस- गंगा का जल का सामस हूआ - गंगाजल

समास का तात्पर्य है 'संक्षिप्तीकरण'।

समस्तपद
(पूर्वपद उत्तरपद)

- समास में दो पद (शब्द) होते हैं। पहले पद को पूर्वपद और दूसरे पद को उत्तरपद कहते हैं।

- जैसे-गंगाजल। इसमें गंगा पूर्वपद और जल उत्तरपद है।

सामस-विग्रह

- सामासिक शब्दों के बीच के संबंध को स्पष्ट करना समास-विग्रह कहलाता है।

- जैसे- राजपुत्र - राजा का पुत्र।

समास के भेद

अव्ययीभाव समास

जिस समास का पहला पद प्रधान हो और वह अव्यय हो उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। जैसे - यथामति (मति के अनुसार), आमरण (मृत्यु कर) इनमें यथा और आ अव्यय हैं।

तत्पुरुष समास

तत्पुरुष समास - जिस समास का उत्तरपद प्रधान हो और पूर्वपद गौण हो उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। जैसे - तुलसीदासकृत = तुलसी द्वारा कृत (रचित)

द्वन्द्व समास

जिस समास के दोनों पद प्रधान होते हैं तथा विग्रह करने पर 'और', अथवा, 'या', एवं लगता है, वह दवंद्व समास कहलाता है।

बहुव्रीहि समास

जिस समास के दोनों पद अप्रधान हों और समस्तपद के अर्थ के अतिरिक्त कोई सांकेतिक अर्थ प्रधान हो उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं।

अव्ययीभाव समास

अव्ययीभाव समास की पहचान

इसमें समस्त पद अव्यय बन जाता है अर्थात समास होने के बाद उसका रूप कभी नहीं बदलता है। इसके साथ विभक्ति चिह्न भी नहीं लगता।

जैसे- आजीवन - जीवन-भर
यथासामर्थ्य - सामर्थ्य के अनुसार
यथाशक्ति - शक्ति के अनुसार
यथाविधि विधि के अनुसार
यथाक्रम - क्रम के अनुसार
भरपेट - पेट भरकर
हररोज़ - रोज़-रोज़

तत्पुरुष समास के प्रकार

ज्ञातव्य- विग्रह में जो कारक प्रकट हो उसी कारक वाला वह समास होता है।

कर्म तत्पुरुष
गिरहकट
गिरह को काटने वाला

अधिकरण तत्पुरुष
नगरवास
नगर में वास

करण तत्पुरुष
मनचाहा
मन से चाहा

संबंध तत्पुरुष
गंगाजल
गंगा का जल

अपादान तत्पुरुष
देशनिकाला
देश से निकाला

संप्रदान तत्पुरुष
रसोईघर
रसोई के लिए घर

तत्पुरुष समास के प्रकार

नञ तत्पुरुष समास

जिस समास में पहला पद निषेधात्मक हो उसे नञ तत्पुरुष समास कहते हैं।

समस्त पद	समास-विग्रह	समस्त पद	समास-विग्रह
असभ्य	न सभ्य	अनंत	न अंत
अनादि	न आदि	असंभव	न संभव

कर्मधारय समास

जिस समास का उत्तरपद प्रधान हो और पूर्वपद व उत्तरपद में विशेषण-विशेष्य अथवा उपमान-उपमेय का संबंध हो वह कर्मधारय समास कहलाता है।

समस्त पद	समास-विग्रह	समस्त पद	समास-विग्रह
देहलता	देह रूपी लता	दहीबड़ा	दही में डूबा बड़ा
नीलकमल	नीला कमल	पीतांबर	पीला अंबर (वस्त्र)
सज्जन	सत् (अच्छा) जन	नरसिंह	नरों में सिंह के समान

द्विगु समास

जिस समास का पूर्वपद संख्यावाचक विशेषण हो उसे द्विगु समास कहते हैं। इससे समूह अथवा समाहार का बोध होता है।

समस्त पद	समास-विग्रह
त्रिलोक	तीनों लोकों का समाहार
नवग्रह	नौ ग्रहों का समूह
नवरात्र	नौ रात्रियों का समूह
अठन्नी	आठ आनों का समूह

द्वन्द्व समास

जिस समास के दोनों पद प्रधान होते हैं तथा विग्रह करने पर 'और', अथवा, 'या', एवं लगता है, वह द्वंद्व समास कहलाता है।

समस्त पद	समास-विग्रह
पाप-पुण्य	पाप और पुण्य
सीता-राम	सीता और राम
ऊँच-नीच	ऊँच और नीच
अन्न-जल	अन्न और जल
खरा-खोटा	खरा और खोटा
राधा-कृष्ण	राधा और कृष्ण

बहुव्रीहि समास

जिस समास के दोनों पद अप्रधान हों और समस्तपद के अर्थ के अतिरिक्त कोई सांकेतिक अर्थ प्रधान हो उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं।

समस्त पद	समास-विग्रह
दशानन	दश है आनन (मुख) जिसके अर्थात् रावण
नीलकंठ	नीला है कंठ जिसका अर्थात् शिव
सुलोचना	सुंदर है लोचन जिसके अर्थात् मेघनाद की पत्नी
पीतांबर	पीले है अम्बर (वस्त्र) जिसके अर्थात् श्रीकृष्ण
लंबोदर	लंबा है उदर (पेट) जिसका अर्थात् गणेशजी
दुरात्मा	बुरी आत्मा वाला (कोई दुष्ट)
श्वेतांबर	श्वेत है जिसके अंबर (वस्त्र) अर्थात् सरस्वती जी

कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में अंतर

कर्मधारय में समस्त-पद का एक पद दूसरे का विशेषण होता है। इसमें शब्दार्थ प्रधान होता है। जैसे - नीलकंठ = नीला कंठ।
बहुव्रीहि में समस्त पद के दोनों पदों में विशेषण-विशेष्य का संबंध नहीं होता अपितु वह समस्त पद ही किसी अन्य संज्ञादि का विशेषण होता है। इसके साथ ही शब्दार्थ गौण होता है और कोई भिन्नार्थ ही प्रधान हो जाता है। जैसे - नील+कंठ = नीला है कंठ जिसका अर्थात शिव।